5

सरस्वती साइकिल योजना के मायने

युगल किशोर तिवारी*

छत्तीसगढ़ में लड़कियों की शिक्षा से जुड़ा एक सराहनीय कार्यक्रम-सरस्वती साइकिल योजना के मायने है। इस योजना से लड़कियाँ न केवल विद्यालय पहुँचकर शिक्षा प्राप्त कर रही हैं बल्कि इससे उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई है। जनसामान्य में उनके प्रति सोच में भी बदलाव आ रहा है। प्रस्तुत है इसकी सफलता के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित करता लेख।

छत्तीसगढ़ राज्य में सरस्वती साइकिल योजना के तहत कक्षा नवमी में पढ़ने वाली समस्त अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं गरीबी रेखा से नीचे की सभी जातियों की लड़कियों को नि:शुल्क साइकिल वितरित की जाती है। सरस्वती साइकिल योजना राज्य में एक बेमिसाल कार्यक्रम बन गया है। यह प्रगति का परिचायक है। इसे साइलेंट रिवॉल्युशन भी कहा जा सकता है जो समाज में महिलाओं की भौतिक एवं सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करने का भी प्रतीक बन रहा है। आवागमन के (व्यक्तिगत शारीरिक मेहनत से युक्त साइकिल) एक साधन मात्र से महिलाओं को उनके साथ होने वाले सामाजिक भेदभाव एवं केवल घर-आँगन तक सीमित रहने के बंधन से मुक्ति मिल रही है। इसके अलावा अन्य दूसरे सामाजिक बंधन अघोषित तौर पर टूट रहे हैं एवं केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि लड़कियों की सामाजिक हैसियत में भी वृद्धि हो रही है। प्रतिवर्ष की तरह ही इस वर्ष भी अकेले राजनांदगाँव जिले में कुल 6452 साइकिल वितरित की गई उसके बाद भी और 62 की माँग बनी हुई थी। इस पर लगभग डेढ़ से दो सौ करोड़ रुपये का व्यय हुआ है।

इस सत्र में साइकिल की गुणवत्ता की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है। इस बार राज्य सरकार की पहल पर बेहतर गुणवत्ता पूर्ण साइकिलें प्रदान की जा रही हैं, जिनमें चेन कवर एवं बास्केट भी लगा है। साइकिलें ए वन कंपनी की हैं एवं आपूर्ति सीधे कंपनी से की गई है।

* सैंक्टम सैंक्टोरम, कौरीनभाठा, राजनांदगाँव, छत्तीसगढ़

हाईस्कूल जाने वाली लड़कियों को शिक्षा के लिए दी जाने वाली इस योजना के अनेकानेक लाभ हैं। अब लड़कियों की गतिशीलता में विकास हो रहा है। वे स्कूल के अलावा आस-पास अपने काम से सुविधाजनक ढंग से आना-जाना कर रही हैं। एक अकेली दो चक्कों वाली साइकिल लड़कियों में आत्मविश्वास जगा रही है। उन्हें सबल बना रही है एवं गतिशील कर रही है। साइकिल उनके भविष्य के सपने बुनने में सहायक बन रही है। साइकिल के पैडल पर बढ़ता दवाब उनके संकल्प को मजबूत करता है। इससे समाज में व्याप्त लैंगिक विभेद का महिलाओं की सीमित गतिशीलता वाला हिस्सा स्वत: ही समाप्त हो रहा है। परंपरागत सामाजिक व्यवस्था में जहाँ लड़कियों का बाहर आना-जाना हतोत्साहित किया जाता था, अब साइकिल मिलने से यह रुकावट स्वयं समाप्त हो रही है। इस प्रोत्साहन योजना से अब लड़कियाँ समाज द्वारा आरोपित बंधन से मुक्त हो रही हैं। अब उनमें अपनी आवश्यकता के अनुसार स्वयं ही अकेले कहीं जाने संबंधी हौसले में वृद्धि हो रही है।

वे साइकिल का उपयोग स्कूल आने-जाने के अलावा अपने व्यक्तिगत कार्यों में भी ला रही हैं। अब वे बेझिझक दुकान, बाजार, अस्पताल जाने का साहस जुटा पा रही हैं। अब वे परिवार का सहारा बन रहीं हैं। घर के रोजमर्रा के काम में बेहतर तरीके से योगदान दे पा रही हैं।

साइकिल चलाने से उनके आत्मविश्वास में ही वृद्धि नहीं हो रही बल्कि हौसले में भी वृद्धि हो रही है। यह गतिशीलता का साधन लड़कियों को समाज में अकेले जूझने का साहस देने में भी सहायक हो रहा है। कहीं आने-जाने के लिए अब वे दूसरों पर आश्रित नहीं रह गई हैं। उन्हें अब भाई, पिताजी या घर के अन्य पुरुष सदस्य के सहारे एवं बल की आवश्यकता नहीं रह गई है। अब उन्हें कहीं आने-जाने के लिए दूसरों का मुँह ताकना नहीं पड़ रहा है। इसके लिए अब वे स्वतंत्र महसूस कर रही हैं।

साइकिल चलाना लड़कियों की जीत का प्रतीक है। साइकिल उनकी तरक्की का मार्ग प्रशस्त करने का ज़रिया बन रही है। साइकिल लड़कियों के लिए तरक्की का अवसर बन गया है। अपनी रुचि के कार्य क्षेत्र तक जाने, अपनी कुशलता में वृद्धि हेतु पहुँच का ज़रिया बन गई है।

अब महिलाओं की कोमलांगी होने की धारणा खत्म हो रही है। साइकिल चलाने से उनके शारीरिक कौशल में विकास हो रहा है। साइकिल के अनुभव के बाद वे मोटर-साइकिल एवं अन्य वाहन चलाने में स्वयं को समर्थ महसूस कर रही हैं। व्याप्त सामाजिक एवं शारीरिक असमर्थता का भाव खत्म हो रहा है। सामाजिक बंधन से मुक्त हो रही हैं। उनकी सामाजिक कार्यों में सहभागिता बढ़ रही है। उनकी अपनी वैयक्तिक गतिशीलता में वृद्धि हो रही है। लड़कियाँ अब दूरी तय कर रही हैं। अपना मुकाम हासिल कर रही हैं।

लड़कियों में अपने अधिकार के प्रति जागरूकता में वृद्धि हो रही है। अब वे सामाजिक ताने-बाने एवं समाज में व्याप्त विसंगतियों

से भली-भाँति अवगत हो रही हैं। उन्हें इन सामाजिक विसंगतियों से निपटने का रास्ता ढूँढ़ने में भी अनेकानेक स्रोतों से मदद मिल रही है। उन्हें समाज को जानने और समझने का बेहतर अवसर मिल रहा है और उनके आंतरिक हौसले में वृद्धि हो रही है। साइकिल प्राप्त कर चुकी बालिकाएँ घर के दूसरे छोटे बच्चों को भी अपने साथ ले जाती हैं। इससे बालिका के अलावा घर के अन्य छोटे बच्चों की शिक्षा पूरी करने की संभावना भी बढ़ रही है अब वे अपने छोटे भाई-बहनों के साथ आस-पास के अन्य बच्चों को साइकिल चलाना भी सिखा रही हैं।

विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा में आठवीं के बाद शाला त्याग दर में सराहनीय ढंग से गिरावट आई है। शाला में लड़कियों के नामांकन में न केवल वृद्धि हुई है बल्कि उनकी नियमितता एवं शिक्षा की पूर्णता में भी आशातीत रूप से सुधार हुआ है। अब वे सहज ही समय पर शाला पहुँच रही हैं। अब घर वालों को भी दूर अपनी बेटियों को हाईस्कूल की शिक्षा के लिए भेजने की समस्या का अंत हो गया है।

विशेषकर आर्थिक रूप से वंचित एवं सुदूर आदिवासी वनांचलों में जहाँ दूरी भी एक बड़ी समस्या होती है, सरस्वती साइकिल पूरे परिवार के लिए आवागमन का साधन बन गया है। इस साइकिल का उपयोग परिवार के शेष सदस्य भी पूरे अधिकार से कर रहे है। लड़के और लड़कियों के बीच व्याप्त भेदभाव को समाप्त करने में साइकिल बड़ी सहायक बन रही है। लड़कियाँ अब अपने पिताजी, माँ एवं घर के अन्य सदस्यों को भी साइकिल की सवारी करा पा रही हैं। पहले यह काम केवल लड़कों/पुरुषों के बस की बात होती थी। अब लड़कियाँ स्वयं की साइकिल के साथ परिवार को सहयोग देने के लिए तत्पर नज़र आ रही हैं।

लड़कियों का भय समाप्त हुआ है। वे शनैः शनैः साहस जुटा रही हैं। उनमें निर्भय अकेले प्रवास का साहस आ रहा है। असमर्थता खत्म हो रही है।

कक्षा दसवीं में पढ़ने वाली कुमारी गायत्री निषाद राजनांद गांव शहर से लगभग 14 कि.मी. दूर जंगलेसर की रहने वाली है। वह शहर के बड़े स्कूल में अच्छी पढ़ाई की अपेक्षा में अपने घर के करीब का हाईस्कूल छोड़ प्रतिदिन इतनी दूर आती है। उसका आत्मविश्वास देखते बनता है। गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई की चाहत एवं बेहतर शाला चयन की स्वतंत्रता उसे साइकिल होने के कारण मिल पाई। वो अपनी साइकिल का एकमात्र उपयोग स्कूल आने-जाने के लिए करती है। अपनी साइकिल का वह स्वयं उपयोग करती है। उसे स्कूल आने में लगभग एक घंटा लगता है।

कक्षा नवमीं की लिखेश्वरी देवांगन भँवरमरा में रहती है और रोज चालीस मिनट से अधिक साइकिल चलाकर स्कूल आती है। अपने गाँव से थोड़ी दूरी पर स्थित हाईस्कूल में वह नहीं पढ़ती क्योंकि वहाँ ज़्यादा शिक्षक नहीं हैं एवं वहाँ गणित की पढ़ाई अच्छे से नहीं होती है।

उसकी साइकिल को पापा एवं भाई भी कभी-कभी चलाते हैं। साइकिल होने से स्कूल

आने-जाने की सहूलियत हो गई है। माँ उसे ध्यान से साइकिल चलाने की हिदायत देती हैं। रोड में चलने वाली गाड़ी, मोटर से सावधान रहने की हिदायत देती हैं। नित साइकिल चलाकर शाला आने-जाने से उसमें ''दबंगता'' का विकास हुआ है एवं साइकिल चलाने वाली ऐसी सभी लड़कियों का आत्म-विश्वास देखते बनता है। कृषि मजदूरी करने वाले पिताजी के लिए वह गौरव है। उसके घर के आस-पास की अन्य सहेलियाँ जो पास के हाईस्कूल में पढ़ती हैं, लिखेश्वरी से शहर की शाला की पढ़ाई के बारे में पूछती रहती हैं।

कक्षा नवमी में पढ़ने वाली दुलेश्वरी बताती है कि उसकी सहेलियों को अगर कुछ काम पड़ता है तो वे उसकी साइकिल ले जाती हैं। इसके अलावा पड़ोसी भी उसकी साइकिल माँगने आते हैं। दुलेश्वरी को साइकिल मिलने से उन सब लोगों को बड़ी खुशी हुई है। अब वह साइकिल का प्रयोग स्कूल आने-जाने के अलावा घूमने जाने एवं खेत जाने के लिए भी करती है। वह कपड़े धोने के लिए भी साइकिल ले जाती है। घर के लिए सामान लाने के लिए इसका प्रयोग करती है। कक्षा नवमी की ही लक्ष्मी चाँदने बताती है कि उसके घर में साइकिल नहीं थी। साइकिल मिलने से बहुत बड़ा फायदा हुआ।

मात्र साइकिल मिल जाने से परिवार में लड़कियों के प्रति सोच एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन हो रहा है। एक अकेली साइकिल-प्रगति एवं सामाजिक बदलाव का इतना सशक्त माध्यम एवं साधन हो सकती है। यह स्पष्ट रूप से परिभाषित है कि यह केवल शैक्षिक परिवर्तन का संकेत ही नहीं बल्कि सामाजिक बदलाव का सशक्त संवाहक बन रहा है।